भाग- I आपदा प्रबंधन से परिचय

अध्याय 2 - आपदा प्रबंधन के घटक

महाराष्ट्र राज्य का मराठवाड़ा क्षेत्र 30 सितम्बर, 1993 को बहुत सबेरे 3.55 बजे रिएक्टर पैमाने पर 6.4 परिमाण के एक गंभीर भूकम्प से प्रभावित हुआ । भूकम्प का केन्द्र बिन्दु गांव किल्लारी था और इस भूकम्प में लातूर सहित क्षेत्र के 10,000 व्यक्ति मारे गए तथा 2 लाख से अधिक मकान ढ़ह गए । क्षेत्र में घटिया ढंग से बने मकान ताश के पत्तों की तरह ढह गए । इस क्षेत्र को क्षेत्र 1 जोखिम क्षेत्र घोषित किया गया था और लोगों ने कोई पूर्व तैयारी नहीं की थी ।

यह समाचार पढ़कर एक आपदा प्रबंधक के रूप में ऐसी आपदा को रोकने या इसके दुष्प्रभावों को कम करने की दिशा में आप क्या करेंगे ?

आप इस आपदा के जोखिम को योजनाबद्ध ढंग से कम कर सकते थे क्योंकि यह एक अधिक जोखिम वाला क्षेत्र था। दूसरा रास्ता यह हो सकता था कि भूकम्प-रोधी मकान बनाए जाएं । कैलीफोर्निया, अमरीका और जापान में कोबे में भूकम्पों को मात्र अल्पकालीन असुविधा के रूप में समझा जाता है और वहां बने हुए मकान भूकम्प-रोधी होते हैं । लोगों को यह पता होता है कि सुरक्षित कैसे रहना चाहिए ।

राष्ट्रमण्डल सरकार आपात्काल, आपदा प्रबंधन के लिए चार बातों को महत्व देती है और ये चार बातें हैं पहले से तैयारी, जवाबी कार्रवाई, सामान्य जीवन स्तर पर लौटना और रोकथाम/ आयोजना/ दुष्प्रभाव को कम करना (पीआरआरपी) और इन बातों के पालन के लिए आपदा प्रबंध व्यवस्था तैयार करने की हिमायत करती है ।

'पी आर आर पी'

- **पहले से तैयारी :** यह सुनिश्चित करने के उपाय कि समुदाय और सेवाएं आपदा के प्रभाव से निबटने के लिए पहले से तैयार रहें ।
- **जवाबी कार्रवाई :** आपदा से पहले, आपदा के दौरान और आपदा के तुरन्त बाद किए गए ऐसे उपाय जिनसे यह सुनिश्चित हो सके कि आपदा के प्रभाव कम से कम हों ।
- **सामान्य जीवन पर लौटना :** ऐसे उपाय जो कि भौतिक आधारभूत सुविधाओं के पुनर्निर्माण तथा आर्थिक एवं भावनात्मक कल्याण की पुनःप्राप्ति में संकट से प्रभावित समुदायों के लिए सहायक हों ।
- **रोकथाम :** संकटों/ आपदाओं की गंभीरता से मुक्ति पाने अथवा उनके प्रभाव को कम करने के उपाय ।

किसी भी क्षेत्र में याद रखी जानें वाली महत्वपूर्ण बातें नीचे दी गई हैं :

पहले से तैयारी	◆ सामुदायिक जागरूकता और शिक्षा । ◆ समुदाय/ स्कूल/ व्यक्ति के लिए आपदा प्रबंध योजनाएं तैयार करना । ◆ मॉक ड्रिल, प्रशिक्षण, अभ्यास । ◆ सामग्री और मानवीय कौशल संसाधन-दोनों प्रकार के संसाधनों की सूची । ◆ समुचित चेतावनी प्रणाली । ◆ पारस्परिक सहायता व्यवस्था । ◆ असुरक्षित समूहों की पहचान करना ।
राहत और जवाबी कार्रवाई	◆ आपातिक क्रिया केन्द्र (नियन्त्रण कक्ष) को चालू करना । ◆ आपदा प्रबंध योजनाओं को कार्यरूप देना । ◆ स्थानीय समूहों की सहायता से सामुदायिक रसोई स्थापित करना । ◆ चिकित्सा शिविर । ◆ संसाधन जुटाना । ◆ ताजा स्थिति के अनुसार चेतावनी देना । ◆ समुचित आश्रय और टायलेट की व्यवस्था करना । ◆ रहने के लिए अस्थायी व्यवस्था करना । ◆ प्रभावितों को ढूढ़ने और उनका बचाव करने के लिए दल भेजना ।
सामान्य जीवन स्तर पर लौटना और पुनर्वास	◆ समुदाय को स्वास्थ्य और सुरक्षोपायों की जानकारी देना । ◆ जिनके परिजन बिछड़ गए हैं उन्हें दिलासा देने के कार्यक्रम । ◆ अनिवार्य सेवाओं-सड़कों, संचार संबंधों की पुनः शुरूआत ।

- आश्रय/ अस्थायी आवास सुलभ कराना ।
- निर्माण के लिए मलबे में से प्रयोग के लायक सामग्री इकट्ठी करना ।
- आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना ।
- रोजगार के अवसर ढूढ़ना ।
- नए भवनों का पुनः निर्माण करना ।

रोकथाम और दुष्प्रभाव को कम करने के लिए योजना बनाना

- भूमि उपयोग की योजना तैयार करना ।
- जोखिम क्षेत्रों में बसावट को रोकना ।
- आपदा-रोधी भवन ।
- आपदा घटने से भी पहले जोखिम को कम करने के तरीके तलाशना ।
- सामुदायिक जागरूकता और शिक्षा ।

हालांकि विशेष जवाबी उपाय विभिन्न संकटों के लिए प्रायः अलग अलग तरह के होंगे फिर भी देखभाल व्यवस्था का एक ऐसा एकल सैट बनाना वांछनीय है जो कि सभी संकटों का मुकाबला करने में कारगर हो । वस्तुतः आपदा प्रबंध क्रियाकलापों की ऐसी शृंखला है जो कि आपदा से पहले और उसके बाद नहीं बल्कि एक दूसरे के समानान्तर चलती रहती है । यह व्यवस्था **विस्तार और संकुचन** माडल से भी अधिक है क्योंकि इस व्यवस्था में यह मानकर चला जाता है कि आपदा संभावित समुदाय के भीतर आपदा की रोकथाम, उसके दुष्प्रभाव को कम करने, जवाबी कार्रवाई और सामान्य जीवन स्तर पर लौटने के लिए आपदा के समय हस्तक्षेप उपाय किए जा सकते हैं । तथापि विभिन्न घटक, संकट और समुदाय की असुरक्षा की संभावना के बीच के संबंध के आधार पर 'विस्तारित' तथा 'संकुचित' होते रहते हैं ।

जोखिम प्रबंध

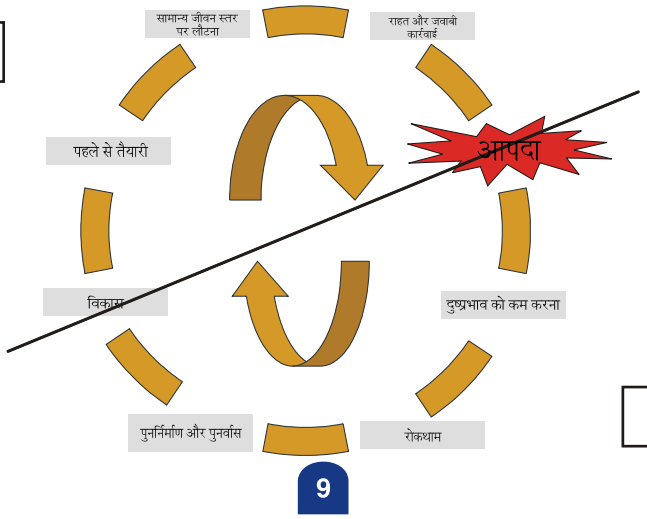

चित्र 2 आपदा प्रबंध चक्र

संकट स्थिति प्रबंधन

उदाहरण के तौर पर पूर्व चेतावनी मिलने पर पहला कदम है पहले से तैयार रहना ताकि यह सुनिश्चित हो जाता है कि समुदाय और सेवाएं आपदा के दुष्प्रभाव से निबटने में सक्षम हैं । इसका सम्बन्ध आपदा आने से पहले किए जाने वाले विशिष्ट उपायों से है ताकि तेज जवाबी कार्रवाई करने में मदद मिल सके । **राहत और जवाबी कार्रवाई** करने के चरण के दौरान सरकारी और गैर-सरकारी संगठन प्रभावित लोगों को खाना, कपड़े और आश्रय उपलब्ध कराते हैं । **सामान्य जीवन स्तर लौटने और पुनर्वास/ पुनर्निर्माण** के चरण के दौरान प्रभावित लोग पुनः अपने मकान बनाते हैं; रोजगार के अवसर ढूंढ़ते हैं तथा सड़कों, पुलों, अस्पतालों और स्कूलों का निर्माण करके अनिवार्य सेवाएं बहाल की जाती हैं । सामान्य विकास कार्य में केन्द्रीय और राज्य सरकार की सहायता सुलभ रहती है । अन्तिम चरण में **रोकथाम और दुष्प्रभाव को कम करने** के कार्य किए जाते हैं ताकि संभावित आपदा का प्रभाव कम-से-कम किया जा सके ।

'आपदा के समय जवाबी कार्रवाई और सामान्य जीवन स्तर लौटने' से हटकर ***'आपदा जोखिम और जोखिम को कम करने'*** तथा ***'सरकार केन्द्रित दृष्टिकोण'*** से हटकर ***'सामुदायिक सहभागिता की कार्यनीति'*** पर अधिक बल दिया जा रहा है । इस संबंध में अध्याय 6 में चर्चा की गई है ।

अभ्यास

1. एक बहु-संकट संभावित क्षेत्र में स्थित किसी ऐसे शहर के बारे में सोचें जिसने अभी तक कोई बड़ी आपदा नहीं झेली है । क्या आप पूर्व-आपदा चरण से शुरू करके कोई कहानी कह सकते हैं ? आपके विचार से आपात्काल और आपदा के पश्चात सामान्य जीवन स्तर लौटने वाले चरण में क्या कुछ होगा?
2. आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि छात्रों और अध्यापकों के लिए आपदा प्रबंध के दुष्प्रभावों को कम करने के बारे में सीखना महत्वपूर्ण है ?
3. परियोजना कार्य :

   निम्न 'शृंखला रेखा' एक ऐसी कार्य इकाई का विवरण प्रस्तुत करती है जिसका पालन किया जा सकता है । इस शृंखला रेखा की प्रत्येक अवस्था एक ऐसा क्रियाकलाप सुझाती है जिसे नियत कार्य के रूप में हाथ में लेना होगा ।

   अध्यापक इसको तैयार करने में छात्रों की सहायता कर सकते हैं ।